सं भी वि०/एफ डी/113-87/40826--चूंकि ईहिरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं० देहली पत्प इण्डस्ट्रीज, 50-51, न्यू एन० ग्राई० टी०, फरोदाबाद, के श्रीमक श्री ग्रखलख ग्रह्मद मार्फत हाफीज फिरोज, गांव व डा० गोची, जिला फरीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इस में इस के बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायानिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय सुमझते हैं ; इसलिए, अब, भौदोगिक विवाद अधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल ईस के द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7-के के अधीन गठित भौदोगिक भिक्षकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला/ मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्यांश्री ग्रंखलखं ग्रहमद की सेवां समाप्त की गई है यां उपने स्वयं गैर-हाजिर हो कर लियन खोया है ? इस बिन्दू पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहन का हकदार है ?

े दिनांक 14 अक्तूबर, 1987

सं० थो० वि०/एफ डी/ 114-87/40870.——चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राज है कि मै० श्रोसवाल स्टीलज, प्लाट नं० 263, सैक्टर 24, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री ललते मार्फत श्री चत्रन लांल श्रीवराय, जनरल सैक्ट्री इस्टक; जिला परिषद्, 1-ए/119, एन० श्राई० टी०, फरोदाबाद तथा प्रवस्थकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीदोणिक विवाद है;

स्रोर चृकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिश्ट करना वांछनीय समझूते हैं ;

इसलिए, अब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947, को घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ध) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करने हुए हरियाणा के राज्यशान इस के द्वारा उन्ने ग्रीधिनियम की घारा 7क के ग्रेबोन गठित भौधोगिक भिष्ठकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिद्धि मामले जो कि उन्न प्रवन्तकों तथा श्रीमकों के बीच या तो विवादयस्त मामला/मामले हैं ग्रथवा विवाद से सुमंगन या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निद्धि करते हैं:—

क्या श्री ललन की सेवाझों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

स्॰ ग्रो॰ वि /रोह/112-87/40377. —बुकि हरियामा के राज्याल की राय है कि मैं॰ उप कृषि निर्देशके, रोहतक के श्रीमक श्री देवेल्ट सिंह, पुत्र श्री सुखबीर सिंह गांव खेड़ी साम्पला तहसील व जिला रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीशोगिक विवाद है;

ग्रीर चुकि होरयामा के राज्यपाल इस विवाद को स्थायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समभते हैं;

इसलिए, अब, प्रौद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947, की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई मिन्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-अप-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिनियम की घारा 7 के अबीन गठित अम न्यायालय, रोहतक, को विवाद प्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अभिक के बीच यातो विवाद प्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित है :--

क्या श्री देवेन्द्र सिंह, पुत्र श्री सुखबीर सिंह की सिवामों का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं श्री वि न रोह / 110-87/40884 -- चूकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं (1) परिवहन मायुक्त हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) महा प्रबन्धक, हरियाणा राज्य परिवहन, रोहतक के श्रीमक श्री नरेश कुमार दलाल, टीकेंट वैरिफाइयर, पुत्र श्री चन्दन सिंह दलाल, मकान नं 121 वार्ड नं 25, पाल नगर, रोहतक तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

क्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायति गेंग हेतु निदिब्द करना वाछतीय समझते हैं;

इसलिए, अब, और्योगिक विवाद अधिनियमें, 1947, की घारों 10 की उपेधोरा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्वर, 1970, के साथ गठित सरकारी अधिनियम की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक, को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित है:—

> क्या श्री नरेश कृमार दलाल की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

संब्द्यों विविश्विती/120-87/40894—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व सचिव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी प्रशियन्ता, प्राप्रेशन डिविजन, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चरखी दादरी के श्रीमक श्री जगदीश, पृत्त श्री राम लाल, गांव व डा व झाझकलां, तहसील चरखी दादरी, भिवानी, तथा उसके प्रशन्धकों के मध्य इसमें इसके वाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रीक्योगिक विवाद श्रिधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिधिसूचना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यागलय, 'रोहतक, को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या हैं उससे हिंसम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उस्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला हैं या उस्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित हैं:—

क्या श्री जगदीश की सेवाग्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

स० घो ० वि०/भिवानी/121-87/40902.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि (1) परिवहन आयुक्त, हरियाणा, चण्डीगढ़, (2) महा प्रवन्धक, हरियाणा राज्य परिवहन, भिवानी, के श्रीमक श्री सुरजीत सिंह परिचालक, पुत्र श्री साही राम, गांव व डा० पालरी, जिला भिवानी तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इस में इसके बाद लिखित मामले में कोई श्री दोषिक विवाद है,

श्रौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं:

इसलिये, ग्रव, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठित्यम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करने हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके हारा सरकारी ग्रिष्ठिस्चना सं० 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970, के साथ पठित सरकारी श्रिष्ठितियम की धारा 7 के ग्रिष्ठीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक की विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायिनिर्णय एवं पंचाट 3 माम में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला हैं या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रयश संबन्धित हैं:—

क्या श्री सुरजीत सिंह की सेवार्घों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं भो वि । श्रम्बा | 110-87 | 40910. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं अविव, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, चण्डीगढ़, (2) कार्यकारी भ्रभियन्ता, कन्सद्रक्शन डिविजन नं 1, हरियाणा राज्य विजली बोर्ड, भम्बाला शहर, के श्रमिक श्री सुभाष चन्दर, पुत श्री घनश्याम दास, मकान नं 184-ए, फरकपुर नन्दा कालोती, जगाधरी वर्कशाप, जिला श्रम्बाला तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके द्वाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रीद्योगिक विवाद है;

भीर चुंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वाछनीय समझते हैं ; र्

इसिलये, भ्रब, श्रौद्योगिक विवाद श्रिष्ठिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा , प्रदान की गई शिक्तयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रिष्ठसूचना सं. 3(44)84-3 श्रम, दिनांक 18 ग्रप्रैल, 1984 द्वारा उक्त श्रिष्ठिनयम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, श्रम्बाला को विवादग्रस्त या उससे सम्बन्धित नीचे |लिखा |मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद मे सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :--

क्या श्री सुभाष चन्दर की. सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं गैर-हाजिर हो कर लियन खोया है ? इस बिन्दु पर्रानिर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ;